Dr. Madan Paswan, History

Class:- B.A. Part-II (Hons.) Paper-IIIrd

Lecture No. (40).

Topic: तुर्कों का आगमन.

April 24. 2020.

Continue (15.04.2020)-

खलीफा कादिर ने उसको नियुक्ति पत्र द्वारा राजसत्ता का अधिकार देकर अधिकारी का दर्जा दिया और अमीनुद्दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ) की उपाधि दी। इसके अतिरिक्त उसको अमीन-उल-मिल्लत (मुसलमानों का संरक्षक) का खिताब भी दिया। महमूद ने पूरे राज्य में खुतबा में खलीफा का नाम सम्मिलित करने का आदेश दिया। इस प्रथा को सन् 1258 ई० में हलाकू खान ने समाप्त किया। मध्य एशिया में गजनवी राज्य एक नए साम्राज्यवादी आन्दोलन का केन्द्र बन गया जिसका उद्देश्य था-तुर्क एवं फारस पर अधिकार। गजनी और लाहौर गजनी साम्राज्य के प्रशासनिक केन्द्र थे।

⊙ सन् 1000 और 1026 ई० के बीच महमूद ने भारत पर 17 बार आक्रमण किए। महमूद का प्रथम आक्रमण 1000 ई० में हुआ परन्तु हिन्दू शाही राज्य के सीमावर्ती दुर्गों को अधिकार में करके वह लौट गया। अगले वर्ष (1001-02 ई०) महमूद ने पेशावर और वैहिन्द पर अभियान कर हिन्दूशाही शासक जयपाल को बंदी बना लिया। यद्यपि महमूद ने धन लेकर जयपाल को मुक्त कर दिया परन्तु उसने अपना राज्य आनन्दपाल को सौंपकर आत्महत्या कर ली।

⊙ 1004-5 ई० में महमूद ने मुल्तान पर चढ़ाई की। वहाँ के शासक दाऊद ने आक्रमण से बचने के लिए आनंदपाल से सहायता मांगी। इस कारण महमूद ने पहले आनंदपाल को पराजित किया। दाऊद ने भी आत्मसमर्पण किया और 20000 दिरहम कर देने का वादा किया।

⊙ 1006-7 ई० में महमूद ने भेड़ा पर आक्रमण किया जिसके शासक बीजीराय थे। पराजित राय ने आत्महत्या कर ली। सिंधु नदी के पूर्वी तट पर महमूद द्वारा अधिकृत यह एकमात्र क्षेत्र था। महमूद ने यहाँ आनंदपाल के बेटे सुखपाल को धर्म परिवर्तन कर शासक नियुक्त किया किन्तु बाद में उसे पदच्युत कर दिया।

⊙ 1008-9 ई० में महमूद ने हिन्दूशाही शासक आनंदपाल तथा उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर, कन्नौज, दिल्ली और अजमेर के शासकों की संगठित सेना को पराजित कर दिया और नगरकोट पर चढ़ाई करके वहाँ के मंदिरों से अपार धन लूटा।

⊙ 1011-12 ई० में महमूद ने मुल्तान पर दो बार आक्रमण कर दाऊद को बंदी बना लिया। पुनः आनंदपाल की मृत्यु के बाद नए शासक त्रिलोचनपाल को पराजित किया।

⊙ 1015-16 ई० में महमूद ने कश्मीर में प्रवेश करने का प्रयास

(Cont...)

किया परन्तु भौगोलिक बाधाओं के कारण वह लोहकोट से आगे नहीं बढ़ पाया।

⊙ 1014 ई० में थानेश्वर पर आक्रमण हुआ।

⊙ 1018-19 ई० में महमूद ने कन्नौज तथा मथुरा पर आक्रमण कर मंदिरों का विनाश किया। कन्नौज के शासक राज्यपाल ने बिना संघर्ष किये ही हार स्वीकार कर लिया।

⊙ 1019-20 ई० में उसने कालिंजर के शासक नन्द को पराजित किया।

⊙ 1021-22 ई० में महमूद ने पंजाब में प्रवेश किया और उसका प्रशासन अपने हाथों में ले लिया। 1022-23 ई० में उसने कालिंजर पर फिर चढ़ाई की और नन्द को पराजित किया। उसने ग्वालियर के दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया।

⊙ भारत में महमूद ने सबसे प्रसिद्ध अभियान 1025-26 ई० में सोमनाथ मंदिर पर किया। उसने सोमनाथ मंदिर से अपार धन इकट्ठा किया और उस मंदिर को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद उसने अनहिलवाड़ा के शासक भरमदेव पर चढ़ाई कर उसने उसे पराजित कर दिया। वापसी में महमूद को राजपूताना के मार्ग से गुजरना पड़ा जहाँ जाटों ने उसे लूटने का प्रयास किया।

⊙ प्रतिशोधात्मक कार्रवाई में महमूद ने 1027 ई० में जाटों पर चढ़ाई की और अन्ततः उसे पराजित कर दिया।

⊙ 1030 ई० में गजनी में महमूद की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद सल्जुक आए जिन्होंने खुरासान पर आधिपत्य के लिए गजनवियों से संघर्ष किया। एक प्रसिद्ध युद्ध में महमूद का पुत्र मसूद पराजित हुआ और उसने लाहौर में शरण ली।

(Continue.....)

— Dr. Madan Paswan, History
Lecture No. 40.
Date 24.04.2020